

अध्याय 18

छोटे का कमाल

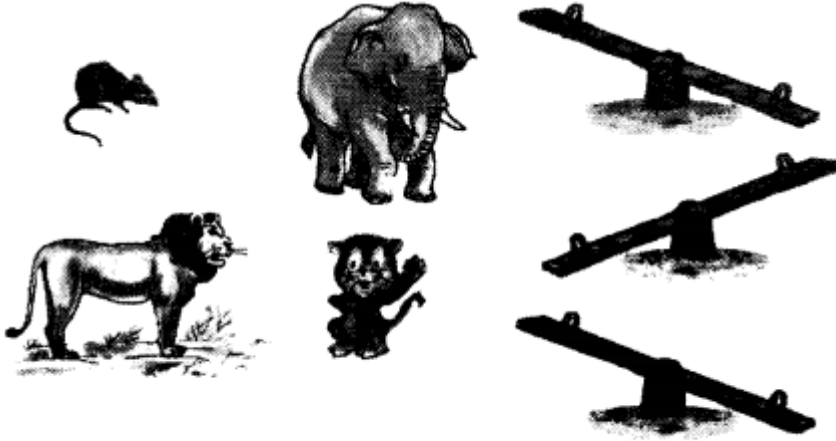
प्रश्न-अभ्यास

पहुँचेगा कौन चोटी पर?

मोटा-तगड़ा समरसिंह नीचे रह गया।
पतली-दुबली छोटी ऊपर पहुँच गई।

प्रश्न 1.

बताओ इनमें से कौन ऊपर जाएगा, कौन नीचे रह जाएगा?



तुम

तुम्हारा दोस्त/सहेली

उत्तर :



ऊपर



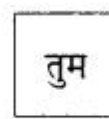
नीचे



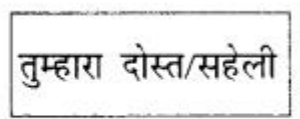
नीचे



ऊपर



ऊपर



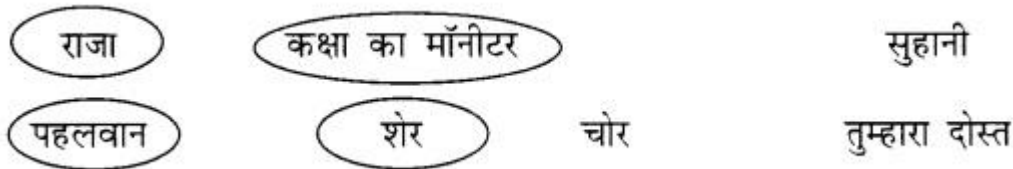
नीचे

गोला लगाओ

प्रश्न 2.

समरसिंह बहुत अकड़ते थे। इनमें से कौन-कौन अकड़ेगा?

उत्तर :



चार अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न: कविता 'छोटी का कमाल' में कौन-कौन से विभिन्न विषयों पर चरित्रों का विवेचन किया गया है?

उत्तर: कविता 'छोटी का कमाल' में कौन-कौन से विषयों पर चरित्रों का विवेचन किया गया है:

1. समरसिंह: समरसिंह एक मोटे लड़के का चित्रण है जो अपने आप को बहुत भारी और आलू भरे पराँठे समझता है। उसका घमंड और उसकी अकड़ कविता में प्रमुख हैं।
2. छोटी: छोटी एक पतली लड़की का चित्रण है जो हेय दृष्टि से नहीं, बल्कि स्वस्थ और खुश रहने के मूड से जीती है। उसकी सी-साँ पर बैठे होने की वजह से उसका भारी होना दिखाया गया है।

प्रश्न: कविता में समरसिंह और छोटी के बीच हुए झूले के खेल में कैसा परिणाम हुआ?

उत्तर: कविता में समरसिंह और छोटी के बीच हुए झूले के खेल में एक दृष्टिकोण परिवर्तित होता है। छोटी का हल्का होने के कारण उसने स्वयं को झूले के दूसरे हिस्से में चोटी पर पहुँचाया, जबकि समरसिंह भारी होने के कारण उसने झूले के दूसरे छोर पर नीचे रह गया। इससे समरसिंह की अकड़ और घमंड में कमी आई।

प्रश्न: समरसिंह का गुस्सा और छोटी की खुशियाँ किस प्रकार प्रतिष्ठित किए गए हैं?

उत्तर: समरसिंह का गुस्सा और छोटी की खुशियाँ कविता में झूले के खेल के माध्यम से प्रतिष्ठित किए गए हैं। छोटी की खुशियाँ उसके स्वस्थ और खुश रहने के मूड से आती हैं, जबकि समरसिंह का गुस्सा और उसका घमंड उसकी आलू भरे पराँठे वाली आत्मा से आता है, जो खासकर उसके भारी होने पर निर्भर है।

प्रश्न: इस कविता में हंसी और मनोहास का कौन-कौन सा प्रस्तुतिकरण है?

उत्तर: इस कविता में हंसी और मनोहास का प्रस्तुतिकरण चरित्रों के भाषा और उनके चरित्र स्थिति से होता है। समरसिंह की अकड़ और उसका घमंड मनोहासपूर्ण हैं, जबकि छोटी की सीधापन और स्वस्थ रहने की खुशियाँ हंसीपूर्ण हैं। झूले के खेल में होने वाले परिणाम ने हंसी और मनोहास की भावना को अच्छे से प्रस्तुत किया है।

सात अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न: कविता 'छोटी का कमाल' में कौन-कौन से भावनात्मक तत्व उजागर होते हैं? इन्हें विवेचन करें।

उत्तर: 1. अकड़ और घमंड: कविता में समरसिंह की अकड़ और उसका घमंड उजागर होता है जब वह अपने आप को बहुत भारी और आलू भरे पराँठे समझता है।

2. स्वस्थ और खुश रहने की भावना: छोटी का स्वस्थ और खुश रहने का मूड उजागर है, जो उसे हेय दृष्टि से नहीं, बल्कि जीवन को स्वस्थ तथा खुश रहने की तरीके से देखने की क्षमता प्रदान करता है।

3. समरसिंह के अहंकार की पराजय: झूले के खेल में होने वाले परिणाम ने समरसिंह के अहंकार को धूमिल कर दिया और उसे छोटी के साथ बराबरी में आना पड़ता है।

4. आत्म-समर्पण: छोटी की सीधापन और आत्म-समर्पण की भावना उजागर है, जो उसे झूले के दूसरे हिस्से में चोटी पर पहुँचने में मदद करती है।

प्रश्न: कविता में हंसी और मनोहास का कैसा प्रस्तुतिकरण किया गया है?

उत्तर: कविता में हंसी और मनोहास का प्रस्तुतिकरण चरित्रों के भाषा और उनके चरित्र स्थिति से होता है। समरसिंह की अकड़ और उसका घमंड हंसीपूर्ण हैं, जबकि छोटी की सीधापन और स्वस्थ रहने की खुशियाँ हंसीपूर्ण हैं। झूले के खेल में होने वाले परिणाम ने हंसी और मनोहास की भावना को अच्छे से प्रस्तुत किया है।

प्रश्न: कविता में किस परकार से छोटी और समरसिंह के बीच बदलते हुए संबंधों का वर्णन है?

उत्तर: कविता में छोटी और समरसिंह के बीच बदलते हुए संबंधों का वर्णन है। समरसिंह की अकड़ और उसका घमंड जब झूले के खेल में हार जाते हैं, तो उसकी अकड़ दूर हो जाती है और वह छोटी के साथ बराबरी में आता है। इससे दिखता है कि वे अब दोस्ती और सहयोग की भावना से आपसी संबंध बना लेते हैं।

प्रश्न: छोटी और समरसिंह के बीच झूले के खेल में होने वाले परिणाम ने कैसे सिखाया कि स्वास्थ्य और खुश रहना क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: झूले के खेल में होने वाले परिणाम ने सिखाया कि स्वास्थ्य और खुश रहना क्यों महत्वपूर्ण है। छोटी, जो स्वस्थ और खुश रहने के पक्षपाती है, उसका जीवन सुखमय और हंसीपूर्ण है, जबकि समरसिंह, जो अपने आप को भारी और घमंडी मानता है, उसका जीवन अधिक अधिक आत्म-हानिकारक और हंसीरहित होता है। इससे यह सिखने को मिलता है कि स्वस्थ और खुश रहना जीवन को सुखमय और संतुलित बनाए रखता है।

कविता का सारांश

‘छोटी का कमाल’ कविता के कवि सफ़दर हाशमी हैं। इस कविता में उन्होंने एक मोटे लड़के और एक पतली लड़की का बड़े ही चुटीले शब्दों में वर्णन किया है। कवि कहता है कि समरसिंह नामक एक लड़का अपने मोटापे पर बहुत घमंड करता था। वह ‘छोटी’ नामक एक दुबली-पतली लड़की को हेय दृष्टि से देखता था। वह अपने को आलू भरा पराँठा और छोटी को पतली रोटी कहता था। वह अपने को लंबा, मोटा-तगड़ा तथा मोटा पटसन का रस्सा समझता था, जबकि छोटी को दुबली-पतली तथा छोटी कच्ची सुतली। लेकिन जब दोनों सी-साँ पर बैठे तो समरसिंह के होश ठिकाने आ गए। हल्की होने के कारण छोटी झूले के दूसरे हिस्से में चोटी पर पहुँच गई और समरसिंह भारी होने के कारण झूले के दूसरे छोर पर नीचे रह गया। समरसिंह की अकड़ दूर हो गई।

शब्दार्थ: अकड़ना-घमंड दिखाना। पटसन-एक पौधा, जिसके रेशे से रस्सी, बोरा आदि बनाए जाते हैं। सुतली-डोरी. रस्सी।

प्रसंग: उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक रिमझिम, भाग-1 में संकलित कविता ‘छोटी का कमाल’ से ली गई हैं। यह कविता सफ़दर हाशमी द्वारा रचित है। इसमें उन्होंने एक मोटे लड़के के घमंड को दर्शाया है।

व्याख्या: समरसिंह नामक लड़के को अपने मोटापे पर बहुत घमंड है। वह पतली लड़की छोटी को बड़े ही उपहास की दृष्टि से देखता है। वह सोचता है कि मैं आलू भरे पराँठे की तरह हूँ और छोटी पतली रोटी की तरह। मैं लंबा, मोटा-तगड़ा हूँ, जबकि छोटी दुबली-पतली। समरसिंह अपने को पटसन का रस्सा तथा छोटी को कच्ची सुतली मानता है।

शब्दार्थ: होश ठिकाने आना-समझ में आना। चोटी-ऊँचाई। चकराना-चकित होना।

प्रसंग: पूर्ववत्।